पञ्चाध्यायी।
नन्दादास कृत।

पञ्चाध्यायी

नन्ददास कृत

(संवत् १८८१)

पञ्चाध्यायी

नन्ददासकृत

१ श्रीकृस्नायनमः ॥ बंदनकरौं कृपानिधानश्री
सुकसुभकारी ॥ सुधजोतिमयरूपसदासुं
दरअबीकारी ॥ १ ॥ हरिलिलारसमत्तमुदित
नितविचरतजगमैं ॥ अद्भुतगतिकहुंनाहिन
अटकहूं निकसेनगमैं ॥ २ ॥ नीलोत्पलदल
स्यामअंगनवजोबनभ्राजैं ॥ कुटिलअलक
मुषकमलमनौंअलिअवलिविराजैं ॥ ३ ॥ ल
लितविसालसुभालदिपतजनु निकरनि
साकर ॥ कृस्नभगतिप्रतिबंधतिमिरकुंको
टिदिवाकर ॥ ४ ॥ कृपारंगरसअयननयनरा १

उतर तननारे ॥ कृस्न रसासव पान अलस
कछु घुमघुमारे ॥५॥ श्रवन कृस्न रस भव
न गंड मैं डुलैं मलदरसैं ॥ प्रेमानंद मिलैं सु
मंद मुसकनि मधुक वरसैं ॥६॥ उंनत नासा अ
धर बिंब सब की छबि छीनी ॥ तिन बिच अ
द्भुत भांति लसति जु कछु कमसि भीनी ॥७॥
कंबु कंठ की रेष देष हरि धर्म प्रकासैं ॥ का
म क्रोध मद लोभ मोह जिहि निरषत नासैं ॥८॥
उर बर पर अति छबि की भीर कछु बरनि न जाइ
जिहि भीतर जगमगात निरंतर कुंवर कन्हाई

रपी॥ सुंदर उदर उदार रोमावली राजत अति
भारी॥ ह्रिदयो सरोवर रस भरि चल्ली जनु उमं
गि पनारी॥१०॥ तारस की कुंडिका नाभि सोभि
त अस गहरी॥ त्रिवली ता मैं ललित भांति जनु
उपजति तिल लहरी॥ ११॥ जुग जानु अरु जानु बा
हु मद गज गति लोलैं॥ गंगादिक नु पवित्र क
रत अवनी महि डोलैं॥ १२॥ जब दिन मनि
श्री कृस्न दृगनि तें दूरि भए दूरि॥ पसरि प
रयो अंध्यार सकल संसार घुमड़ि पूरि॥१३॥
तिमिर ग्रसित सब लोक ओक दुषि दुषित

याकर॥ प्रगट कीयो अद्भुत प्रभाव भागवत
विभाकर॥ २४ ॥ ताही मै पुनि अति रहस्य य
ह पंच्याध्याई॥ तन मै जैसे पंच प्रान। ऐसे स
कल मुनि गाई॥ २५ ॥ परम रसिक राकु मित्र मोहि
ह्रिनि अज्ञा दीनी॥ ताते मैं यह कथा यथामं
ति भाषा कीनी॥ २६ ॥ स्रुक मुनि रूप अनूप
है कहा वरनै कवि नैद॥ श्री वृंदावन वर गिद्र
जहां वृंदावन चंद॥ २[illegible] ॥ श्री वृंदावन विपिन
कछु कछु विवरनि नजाई॥ कृस्न लीलनि नली
ला कै कारु धरि होउ जउताई॥ २७ ॥ जहां न

३ पैंचाग षः जमगल ताकुं जवी रूघनरा डैते ॥ नहि
न काल गुप्रभाव सदा सोभित है ते ते ॥ १८ ॥ सं
कल जंतु अविरुध जहां हरि मग सँचें गच
रहिं ॥ काम क्रोध मय लोभ रहत लीलानु
सरहिं ॥ १९ ॥ सब रितु संत तव सत लसत तेंहा
दिन दिन सोभा ॥ अन वन नि जाकी विभति क ज
रि सोभित सोभा ॥ २० ॥ ज्यौं लछिमी निज रूप पं
मनुप चरन सेवति नित ॥ मुविलसत जु वि
भूति जगत जगमगि रहि जित कित ॥ २१ ॥ श्री
मो नंत महिमा अनंत को वरनि सक कवि ॥

संपैमै करषमासौ कछुक कहि श्री मुष ज्ञाकी
छवि ॥ २२ ॥ देवन मैं श्री रमा रवन नंदन नाराय
ण प्रभु उस ॥ वननि मैं श्री वृंदावन सु देस
सव दिन सोभ तन त स ॥ २३ ॥ या वन की वर
वान कुया वनि हि वनि आवै ॥ सेस महेस सु
रे स ग नेस न पार हि पावै ॥ २४ ॥ जहां जे ति
क द्रुजाति कलपद्रुम सम सब लायेक ॥ चिं
तामनि सम भूमि सब नि चिंत तफल दायु
क ॥ २५ ॥ तिन मधि ई कजु कलपतरु ल०

पंचा गिरौं हि जगमग जोती ॥ पत्र मूल फल फूल
८ सकल हीरा मनि मोती ॥२६॥ तिन मधि इति
नेक गंध लुब्ध अलि गान करत मति
वारि किंनर गंधर्व अपसरा रानन पार कीन्ये वलि
॥२७॥ अमृत फुहीं सुख गुही पराति रहति ति
नित ॥ रास रासिक सुंदर पिय को सदन दूरि क
रन हित ॥२८॥ डंहि सुरत रूम धि अवर ए
क अद्भुत रूप विराजै ॥ साषा दल फल फूं ल
नि हरि प्रति विंब विराजै ॥२९॥ तातर कौ
मल कनक भूमि मनि मय मोहति मन ॥ ८

दिषियत सव पूर्ति विंव मनो धामैं दुसरौ
वनु ॥ २० ॥ तहां ई कमनि मय विति स्ति कौ
शं कुसुम गास्त्र ति ॥ ता पर षो उसदत्त सरौ
ज्ञ सौं दुत्त चक्रा कृत ॥ २१ ॥ मधि कमनीय
करनि का सव सुष संदर कंदर ॥ तहां रा
जत वृज तैं राज कुंवर बार सिक पुरंदर ॥ २२
नि कर विभाकर दुति मेट तस्सम कौ स्क
म मनि काास ॥ हरि जू कौ उरस्थ चिनि वि
उ विपै सौं लागत उ उ ज्जस ॥ २३ ॥ मोहन अ
द्भुत रूप कहि न क्रावै कवि ता की ॥ अषि ल

पंचा
५

अंतर्यापी जुवनस्य न्मात्मा है जाकी ॥ ३४ ॥
परमात्माधर्म करि सब के अंतर जामी
॥ नारायन भगवान धर्म करि सब के स्वा.
मी ॥ ३५ ॥ बाल कुमार पौंगड धर्म आक्रां
ति लति तत तनु ॥ धर्मी नित्य किशोर का
न्ह मोहत सब कौं मनु ॥ ३६ ॥ अस्र अद्भुत
गोपाल बाल सब काल बसत तहं ॥ यहां
तैं श्री वैकुंठ बिभौ कुंठित लागत जहां ॥ ३७
जदपि सहज माधुरी बिपिन सब दिन सु
षदाई ॥ तदपि रंगीली सरद समय मिलि

अति कविपाई ॥ ३८ ॥ ज्यौं अमोल नग जग
म गाई सुंदर जराय संग ॥ रूपवंत गुनवंत
वहरि भुखन भुखित अंग ॥ ३९ ॥ जनी मुख
सुखदेति ललित प्रफुलित जहा मालती
॥ ज्यौं नव जोवन पाइ लसति गुवंति बालती ॥
॥ कविसौं फुले अवेर फुल असल गोलुनी
ाई ॥ मनु हुसरद की कपा कविली विहस
ति नाई ॥ ४१ ॥ ताही छिन तुड़रा उड़ दित र
सरास सहाई क ॥ कुंम कुंम मंड़ित प्रिया वद
न जनु नागरनायक ॥ ४२ ॥ कौमल किरनि

पंचा० ५८ निअरुनिमैवनमैव्यापिवनियौ ॥ मनुसि
उषेत्योपकाजघमडि कुडिरह्योगुलाललउमें
॥ ५२ ॥ फटिकछरीसीकिरनिकुंजरंध्रनि
वनिआई ॥ मानुकुवितनविताने दसत मु
नावतनाई ॥ ५४ ॥ मंद मंद चलिचारुचं
द्रमाअमसफुविपाई ॥ उफकतिहेजनुरमा
रमनपिपकैांतिकआई ॥ ५५ ॥ तवलीनीक
रकमलजोगमायासीमुरली ॥ अघटितघ
टिनाचतुरअहोहरिअघपासुरजुली ॥ ५६ ॥
ताकीधुनिमैंनिगमअगमप्रगटेवउना ६

गर॥ नादब्रह्म की जननी मोहनी सब सुख
सागर॥ ४७॥ पुनि मोहन सौं कछु एक कौमि
तिन कलगान कियो अभ्यास॥ वामें लोचनवा वि
लतिन कौ मन मोहन हरन होइ जस॥ ४८
सुनित चलीव ब्रजबधू गीत धुनि कौ मारा
गहि॥ भवन भीति द्रुम कुंज पुंज कितहू अ
ट कीनहि॥ ४९॥ नाद अमृत कौ पंथ रंग
मय्यो सुद्धि सभारी॥ तिहि ब्रजतिय मतें
चलैं आन कौउ नहि अधिकारी॥ ५०॥ सु
द्ध प्रेम मय रूप पंच भूतिक तैं न्यारी॥ ति

नहि कहा कौ दुगहै जोतिसि जगत दुख्यारी पर
जे रु किगई घर ऋति धीर गुनमय पसरी रव
स ॥ पुनि पाप पार थ्वास च्यौत न नहि नप च्यौ
रस ॥ ५२ ॥ परम दुसह श्री कृस्न विरह दुषव्या
प्यौ जिन मैं ॥ कोटि वरष लौ गिनर क भोगये मैंगे
छिन मैं ॥ ५३ ॥ पुनि रंचक धरि ध्यान पिय
हि परिरंभ दियौ जब ॥ कोटि स्वर्ग सुष सुग
ति दीन कीन्य मंगल सब ॥ ५४ ॥ पितलि
पाव पाहन पारसि कंचन द्वै सो है ॥ नंद सुव
न सों परम प्रेम रहो मचिर जकौ है ॥ ५५ ॥

तेपुनितिहमगचलीरंगीलीतजिगहहसं
गम॥ जनुपिंजरनितेंछुटेकुटेनवप्रेमविं
हंगम॥ ५६॥ सावनसरितानरुकहिकरैंजो
जतनकोउकोति॥ कृष्नागहेंजिनकेमनते
कैंसेंरुकहिसगमगति॥ ५७॥ जदपिकं
हेकेकहेंवधूनुमाभरनवनाए॥ हरिपिय
पेअनुसरतजहांकेतहांचलिआए॥ ५८
परमभागवतनौरसिकजुपरीदितराजा
प्रस्नकरीरसपुष्टकरनेंनिजसुखकेकाजा
॥ ५९॥ श्रीभागवतकोपाठजानिजगको

पंचा० २ हितकारी ॥ उदर दरी मैं करी कौंन्ह ताकी
रखवारी ॥ ६० ॥ जाकौ सुंदर स्याम कथा छिन
छिन नई लागै ॥ ज्यौं लिपट पर जुवति वातें सु
नि अति अनुरागै ॥ ६१ ॥ तौ मुनि कौं गुनमय स
रीर पर हरि पाए हरि जौनि मंडे केवनी
य कौं न्ह नहि ब्रह्म भाव करि ॥ ६२ ॥ तव स्री
सुक देव देव रह्यौं अचिरजु नाही ॥ सर्व भाव
भगवान कौं न्ह जिन के हिय माही ॥ ६३ ॥ पर
म दूषि सिसु पात्न वात्न पन तें निकसाति ॥
जो गिन कौ जो दुर्लभ सुलभ ही पाई सो गति २

॥ ६४ ॥ ए हरि रस ओपी गोपी सब त्रिय न तैं ।
न्यारी ॥ कमल नयन गोविंद चंद की प्रान ।
पियारी ॥ ६५ ॥ तिन के नुपुर नाद सुने जब प
रम सुहाए ॥ तब हरि के मन नयन सिमिटि
सब स्रवननि आए ॥ ६६ ॥ झुनुक झुनुक पुनि
छबि लि भांति सब प्रगट भए जब ॥ पिय के अं
ग अंग सिमिटि ले छबि लै नैननि तब ॥ ६७
सब के मुष आवलोकित पिय के नैनवने यौं
॥ बहु तम र द ससि माझ आवौ है चकोर ज्यों ॥ ६
८ ॥ आति आदर करि लई मैर चढ़ि दिस याठौ

सनु॥ छविलिछटनिमिलिछेकीमंजल
घनमुरतिजनु॥ ९९॥ नागरगुरुनंदनंदचं
दहासिमंदमंदतवबोलेबांकेवयनप्रेमकेप
रमऽप्रयनसव॥ १०॥ तुलरसकोयाःहुसुभा
ववांकोरसपावे वंकवेहाजिऽप्रफुकेहेनि॥
वंकऽप्रीतिरसहिवढावे॥ ११॥ लालमसालेके
विंगवचनसुनिचकतभईयों॥ वालमगी
सीमालसपैनबनमुलिपरीज्यों॥ १२॥ मंद
पासपरहसीलसीतिरछीऽप्रीषियांऽजस
॥ रूपउदधिइतरांतिरंगीलीमीनपातिज

स॥७३॥ तव षिय कह्यौ घर जाऊं अधिक
खि तचिंता वाढी॥ पुत्र रिनि की सी प्रीति र
हि गड्ड इक टक टाढी॥७४॥ दूष के बीज अ
विसी बसी बनै चली ना लसी॥ अलक अ
लिनु के मार नम्रित मानौ कमलन मालसी
७५॥ हिय मारि विहहूं ता सउसासनि संगजा
वति अर॥ चलेक फु के मुर आइ मध कम पेर अ
घर विवर॥७६॥ तव बोली वजवाल ला
ल मोहन अनुरागी॥ सुंदर गादगद गिरा गि
रिधर हि मोधकरी लागी॥७७॥ अहो अहो

मोहनप्रानानाथसुंदरसुषदाईक ॥ कुष्ण
चनजिनि कहेमोहि नए तुम्हरेलोईक ॥
७८ ॥ जब कोऊ पुछे धर्म तब ताकौं कहिए
पिय ॥ बिनही पुछे धर्म कित नकौं कहि
एदहिएहिय ॥ ७९ ॥ धर्मनेम जपतपब्रत
कौसबफललहि बतावै ॥ यहकहनाहन
सुनिजुफलकिरिधर्मसिषावै ॥ ८० ॥ मुकुतु
म्हारौ यहरूपधर्मकेधर्महिमाहे ॥ घरमैंको
तियधर्मभरमयाऽप्रगैकोहै ॥ ८१ ॥ तैसिद्धि
पियकीमुरलीजुरलीऽग्रधरसुधारस

सुनि निठुर धर्म न तजै तरुनि त्रिभुवन मै को
उरस ॥ २२ ॥ न गनै कौ धर्म न रह्यौ पुलकि
तन चले ठौर तैं ॥ धाम मग गोव फम फै कढ
ते रहे कौर तै ॥ २३ ॥ सुनि गोपिनि के प्रेम
वचन आप्राच सीला जी त्रिय ॥ पघरि चल्यौ
नवनीत मी तनवनीत सद्रस हिय ॥ २४ ॥ वि
हसि मिले नंदलाल निरषि वजबाल वि
रह वस ॥ जदपि आत्माराम रमत तम ए पर
म प्रेम वस ॥ २५ ॥ विहरत विपिनि विहार
उदार नवल नंदनंद ॥ नव कुंम कुंम घन

सारु चारु चर्चित तन चंदन ॥ ८६ ॥ गोपीज
नगन मोहन मोहनलाल वन्यो यों ॥ रूपपने
दुति के उडगन उडपति घन षेलन त्यों ॥ ८
७ ॥ कुंजन कुंजन डोलनि जनु घन रूपप्रावृ
नि ॥ लोचन त्रिषित चकोरनि के चित चौ
प वढावनि ॥ ८८ ॥ सुभग सरित के तीर धीर
वलवीर गए तहां ॥ कोमल मल्लय समी
र षविनि की महा भीर जहां ॥ ८९ ॥ कुसु
म धूर धूंधरी कुंज छवि पुंज निकाई ॥ गुं
जत मंजु अलि निंद वेनु जनु वजति वधाई ॥

४०॥ उत महकति मालती चारु चंपक चि
त चोरत ॥ उत घनसारु तुसार मिलनी मंदार
रु कोरत ॥ ४१॥ उत लवंग नवरंग पेलि उत
केलि रहीरस ॥ उत कुरव केकेबरा केतकी
गंधवंधवस ॥ ४२॥ उत तुलसी छवि उलल
सी छाद्दित परमल लपटै ॥ उत कमोदन प्रा
मोद गोद भरि भरि सुषदपटै ॥ ४३॥ उ जल
मृदुल बालुका पुलिनि प्रीति प्रमसु हाई ॥
जमुना जु निज कोरस सुढार प्रपनै हाथ बना
ई ॥ ४४॥ विलसत विविधि विलास सहासनी

बीकुचपरसतसरसतप्रेमऽप्रनेगरंगनव
घनडेपावरसत ॥ ५५ ॥ तवऽप्रायोयहाका
मपंचसरकरहैताकैं ॥ ब्रह्मादिककौप्री
तिवढिरह्योऽप्रीतिमदूजाकैं ॥ ५६ ॥ निरषि
वृतवधूसंगरंगभीन्योकिशोरतनु ॥ हरिम
नमथकैरिमथ्योउलटियामनमथकोम
नु ॥ ५७ ॥ मुरझिपह्योतहांमयनकहूंघ
नकहैंविसिषवर ॥ रतिदेषिपतकीदसाभी
तमईमारतिउरकर ॥ ५८ ॥ पुनिपुनिपिय
हिऽप्रालिंगतिरोवतिऽप्रतिऽप्रनुरागी ॥ मद

नकैवदनचुचाइ प्रेमतनमुत्तमरिलैमा
गी॥ ९९॥ अस प्रद्भुतमोहनैपियकौंमि
लिगोपदुलारी॥ प्रेचरज्युनहिजोगव र३
ह्वैइगिरिधरजुकीप्यारी॥ १००॥ रूपमरी
गुनभरीपुभिपरमप्रेमवपु॥ क्योंनकैप्र
भिमानकौंनकैमगवानहिनकैवस॥ १०१॥ तु
ह्रोनवदीनीरागभीरतहांमलमबरीपरई॥
छिलछिलसलिलनपरैपरैतोढविनहि
करई॥ १०२॥ प्रेमपुंजवर्धनधोकेकाजबृंदे
गाकुंवरपिय॥ मेंउकुंजमेतनकद्वैस्वति

पंचा०

१३ प्रेमभरीहिय ॥ १०३ ॥ मध्क रवसक्तैसैंभ्रातीन
रंतासुष तोमारी ॥ वीचवीचकटकन्प्रव्रत्त
तिक्तन्प्रतिसेहुचिकारी ॥ १०४ ॥ ज्योंपुटपुट
कैदियैनिपटह्रीरसहिपरैरंगतैसैंहिरंच
कविरहप्रेमकेपुंजवढतन्प्रेग ॥ १०५ ॥ जि
नकहूंनैननमेषवोटकौटिकजुगजाही
जिनकहुंगहवनकुंजन्प्रोटदृषगनन्नाना
ही ॥ १०६ ॥ ठगिसिरहीवंजुबालललीललिगिरिध
रपियाविनयो ॥ निधनमहाधनपाेंतवही १
ज्योंजारभईयौं ॥ १०७ ॥ ह्वैगईविरहविकल

१३

मनु बु 0 रु तद्रुमबेलीवन्नु ॥ कोतृकु कोचैतन्
न्यकफु लनडानहि हि बि र ही जन्नु ॥ १०८ ॥ है के
तकीउतनै किततृ चि तचे पिया रुसे ॥ कि
धौं नंदनंद मंद मुसि कितनु मरे उमन मसे ॥
१०९ ॥ है मालति है जाति जुथकेसुनिहितत
दै चित ॥ मान हरनमन हनैगिरिधर लाल
लहेरत ॥ ११० ॥ हे मुकतापल बेलि धरै मु
कतापल माला ॥ देषे हैनैन विसाला मोह
ननंदके लाला ॥ १११ ॥ हे मंदार उदारवीर
करवीर महामति ॥ देषे है कहु वलरधीर

मनहरनधीरगति ॥२२२॥ हेचंदनदुषकं
दनसबकहुजरतजुडावहु ॥ नंदनंदनज
गवंदनचंदनहमहिबतावहु ॥२२३॥ पुछहुरी
इहिलतनतहिफुलिरहीफुलनिजोई ॥ सुंदर
पियकरपरसविनाअसफुलनहोई ॥२२४
हेसषिएमृगवधुइनहिपुछहुकिनअनुस
री ॥ डहडहेइनकेनैनअबहिकहुदेषेहैहरि
२२५ ॥ अहोकदंबअहोअंबनिवक्यौरहेम
वनगहि ॥ अहोबटतुंगसुरंगवीरकहुतेइत
उतलहि ॥२२६॥ जमुनानिकटकेविटपवु

ऊि मई निपट उदासी ॥ क्यों कहै है सखि महाठि
नए तीर्थवासी ॥ २२७ ॥ हे ऽम्रव नीनवनीत चौ
रचित चोरहमारे ॥ राखे है कि तहूं दुराइ वता
इ धौ प्रानपियारे ॥ २२८ ॥ हे तुलसी कल्याः
नि सदा गोविंदपदप्यारी ॥ क्यों न कहै है तितु
नंदसुवन सौं दसा हमारी ॥ २२९ ॥ ज हौं ऽम्रा
वै तमपंनु कुंनु गहवर तरु का हीं ॥ ऽम्रपक्र
पनै मुखचौं दिनै चलै नैसुं दरि तिन माहीं ॥ २३०
ई है विधि वन घन वूझि ढूंढि फिरी उनमत कि
नाई ॥ करनतल जीमन हैरन लाल लली लाम

नमाई ॥१२१॥ मोहन लाल रसा की लीला इन
हीसौं है ॥ केवल तन्मय भई कछू न जानहिं ह
म कौ है ॥१२२॥ मं गीगाहै तें मंग होइ उहि कौ ट
म हातउ ॥ कृस्न प्रेम तें कृस्न होइ कछु नाहिं न प्र
चिर जु बउ ॥१२३॥ सवपायौ पिय पद सरोज कौ बो
ज रू चिरत हों ॥ ज्यौरि दरस्त्र कुस कुलिस कम
ल जु वज्र गम गान जहां ॥१२४॥ जो रज सिव कम
ज षोजत जोजत जोगी जन नहिं य ॥ सो रज बंद
न कर नत लागी सिर धरनत लगी सिय ॥१२५॥ ज
हांनि रषि ढिग जुग मग नन प्यारी पिय के पग ॥

चितईपरसपरचकितमईज्यौंरीचलीतिहीमग
१२६॥ प्रागौचलिरुकन्नबलो कीनवपल्लव सै
नी॥ जहांपियसुसमकुसमपल्लैसुहृथगुंथी है
वैनी॥१२७॥ जहांपायौरुकमंबुमुकरमनिजु
टतविलोलै॥ तिहिपुछहिबुजबालबिरहा
मस्योसोऊनबोलै॥१२८॥ तर्ककरहिम्रापमै
कहाँयहक्यौंकरलीनौ॥ तिनमैकोउतिन
केहियकीतिनिउतरदीनौ॥१२९॥ वैनीगुरु
नममैपछविलैछैयलपाछैवयठेजव॥ संुदर
वदनविलोकनसुषकोअंतरभयोतव॥१३०

ताते मंजुल मुकर सुकर लै बाल दिषायो ।
॥ श्री मुष कौ प्रतिबिंब सषी तव सन मुष आयो
१३१ ॥ धन्य कहत भई ताहि नहि न कछु मन
मै कोपी ॥ निर्मत्सर जे संत तिन की चूडाम
णि ओपी ॥ १३२ ॥ ईन ननी कै न्प्रा प्राघे है रहि सुष
जोई ॥ ताते अधर सुधार रस पीवत निधर
क होई ॥ १३३ ॥ पुनि अगो चलि तन के द्वार दे
षी सोई ठाढी ॥ जो सौं सुंदर नंद कुंवर पिय प्रति
बाढी ॥ १३४ ॥ जो रतन की जोति छुटि छवि छा
इ रही घर ॥ मान कुं ठाढी कुंवरि सुभग के चन

स

अवनीपर ॥ २३५ ॥ तनु घन तैं बिछुरी बिजुरी

मान नितन्य काछै ॥ किधौं चंद सौं रूसि चं

द्रिका रहि गई पाछै ॥ २३६ ॥ नैंनन तैं जलधा

रहार धोवति धरधावनि ॥ भवर उडाइन स

कति बास बौं मुष ढिग आवनि ॥ २३७ ॥ कालि

कालि प्रिय महा बाहु यौं बदत कै ली ॥ महा

विरह की धुकनि मूनि हो वति षग मृग बेली ॥

२३८ ॥ धाइ मृजनि भरि लई सब निलै लै उर

लाई ॥ मानहुं महा निधि चोर मधि आधी

निधि पाई ॥ २३९ ॥ निकिले तहां तैं अप्रहरि

वह्रिजमुनातटआई ॥ जहां नंदनंदन जग
वंद नपियल्याउलनआई ॥ १४० ॥ कहनलगीअ
हो कुंवर कान्हव जप्रगट जवतें ॥ अवधिमु
तरंदिराअलनेक्रतुदेरहेतवतें ॥ १४१ ॥ नैन
मुदिवोमहाअसअैहासीहासी ॥ भारतहो॰
केतसुरतिनाथविनुमोलकिदासी ॥ १४२ ॥
विषजलतेंव्यालतेंअनलतेंदामिनिझरतें
॥ कैयाराषीनहिमरनदईनागरनगधरतें ॥
१४३ ॥ जबतुमजसुदासुतनभएपियअति
ऊतरानें ॥ विश्वकुसलकैंकाजविधिविन

ती कीरस्यानैं ॥१४४॥ स्र हौ मित्र स्रहौ प्रानना
थ यह स्रचिर जुमारी ॥ स्रपननि जो मारि हौ
कीरि हौ का कीर षवारी ॥१४५॥ जब पसु चारन
चलत तु चरन को प्रलन घारि वन मैं ॥ सिलत तन कं
टक स्यं टक कसक त हम रैं मन मैं ॥१४६॥ प्र
नत मनोरथ करन चरन सरोरुह पिय को ॥
कहा घटि तै है नाथ हरत दुष हमरैं हिय को ॥
१४७॥ फनी फन नि पर स्त्र रंपे डर पेन हि न नैं
कत व ॥ छवि लिछ ति नि पर धरत डर त कैंया
कों न्है कुंवर स्प्रव ॥१४८॥ जानत है हम तुम

जडरतवजराजदुलारे ॥ कोमलचरनसरोज
जुरो जकुटौरहमौरे ॥ १४९ ॥ मनैमनैधरिहै
पियहमकूं तौअधिकपियारे ॥ कतअरवीम
अउतगडततन कुर्पअन्यारे ॥ १५० ॥ जैंपरि
तुमरीकपाम तसबतापसिरावें ॥ अप्रमराअ
मत कूं तुछिक रैंब्रह्मादिक गावें ॥ १५१ ॥ जैं
परिजिनकीर तुमपेसुंदरमोहनमुखअवलो
क्योपिय ॥ तिनकी तापन मिटहिरिसिकसं
विद कोविदिहिय ॥ १५२ ॥ जोकैसैंहीसाज
समैमोहनमुखदेष्यो ॥ तौयाविधनाकुरकरी

लैनैननिमेष्यौ ॥ २५३ ॥ इहिविधिप्रेमसुधानि
धिमदकौढगईकलोलैं ॥ विहवलह्वैगईबाल
लालसोंप्रलपनेवलनबोलैं ॥ २५४ ॥ तवतिहिंसे
प्रगटभएनंदनंदनप्रियप्यों ॥ दर्षिवंधककरिदु
रैवहुरिप्रगटैनटवरज्यौं ॥ २५५ ॥ पीतवसनव
नमालधरेमंजुलमुरलीहथ ॥ मंदमधुकु
रमुसकातनिपटमनमथकेमनमथ ॥ २५
६ ॥ पियहिनिरषितियवृंदउठीसवएकहिवे
रयों ॥ फिरिज्याएघटप्रानवहुरिफिरजागतगेइं
द्रियज्यौं ॥ २५७ ॥ महाक्षुधितकैजसभोजन

सोंप्रीतिसुनीहै॥ताहीतैंसतगुनीसहस्रगु
नीकिधौकोटिगुनीहै॥२५८॥कोउचूटपटी
सोंकाछनपटीकोउदुरवछनपटी॥कोउग
रलपटीकहतिमलैजुमलैकोंन्हकपटी॥
२५९॥कोउनगाधरवरनटकीगाहिरहीप
रिकरपटकी॥उनुनवघनतैसटकीदामि
निदामिनिअटकी॥२६०॥वेहेताहीपुलिन
परमआनंदभयोहै॥फविलिनुप्रपअप
नोघानुफविसोंविघाउदयोहै॥२६१॥एक
एकहरिदेवसवकीआसनपरिवैसे॥किए

२९

हैमनोरथपूरनजाकेरुपजेजैसे॥१६२॥ज्यों
अनेकजोगेस्वरहीयमेध्यानधरतहै॥
एकहीवेरउकमूरतिसवकौसुषवितरत
है॥१६३॥कोटिकोटिब्रह्मांडजदपिएकि
लीठकराई॥ब्रजदेविनिकीसमासांवरै
अतिछविपाई॥१६४॥सवसुंदरिनैसनमु
षसुंदरस्यामविराजै॥ज्यौंनवदलमंडल
मैकमलकर्निकाभ्राजै॥१६५॥वृजनल
गीनवलवालनंदलालपियहितव॥प्री
तिरीतिकीवातमनमैमुसकातजातिस

व ॥ १६६ ॥ इक समै जु तिय कुंभ सु त्रिहि बिन हिम
जुते इक समै जुही ॥ कहो कौन है तेकवनरूप प्रा
हि है दुहु वनित जु ही ॥ १६७ ॥ जदपि जगत गु
रु नागर नागर नंद दुलारे ॥ गोपीयिन के
प्रेम के रूपा ओ रूप नैही मुख हारे ॥ १६८ ॥ तब
बोले ब्रजराज कुंवर हौं रिनी तुम्हारो ॥ अप
नैं मन ते दूरि करो यह दोष हमारो ॥ १६९ ॥
कोटि कल्प लगि तुम प्रति प्रति उपगार करौं
जौ ॥ हे मन हरनी तरनी उप्रिरिनि तु न हों
तौ ॥ १७० ॥ सकल विश्व अपवस करी सो मा

या मोहति है ॥ प्रेम मयी तुम्हरी माया मोहि
मोहति है ॥ १२ ॥ सुनि पिय के रस बचन स
बनि गास खाडि दयो है ॥ बिहसि अप अप
नै कंठनि लील लगाइ लयो है ॥ १३ ॥ कोटि
कलप तरू बसत लसत नप दपं कउ खाही
का मध्ये नकृपुनि कोटि कोटि बिलुटत रउ
माही ॥ १४ ॥ सो पिय मए अनुकूल तुल कौ
उन भयो अब ॥ निरखवधी सुख कै मूल सकल
उनकूल की सब ॥ १५ ॥ अपारं मित अद्भुत सु
रास तुहि कमल चकपद ॥ निमित नकित

हुंहैउसबैनतकबिचित्रबरा ॥ २५ ॥ नवमरक
तेमनिस्यामकनकमनिगनबजबाला ॥ बंस
बनकहुंरिझिमनुहूंपहिराइमाला ॥ २६ ॥
नूपरकंकनकिंकनिकरतलमंजुलमुर
ली ॥ तालम्रदंगउपंगचंगएकहिसुरजुर
ली ॥ २७ ॥ मृदुलमुरजटंकारतारझंकारमि
लीधुनि ॥ मधुकरजंत्रकीचारभवरझंकार
रलीपुनि ॥ २८ ॥ तैसियोमृदुलपदपटकनि
चटकनिकटतारनिकी लटकनिमटक
निझलकनिकलकुंडलहारनिकी ॥ २९ ॥

सांवरे पिय संग नृत्तति वृज की चंचल बाला
॥ तनु घनमंडल में तुल षेलति दामिनि मा
ला॥१२०॥ छवि विलितियन कै प्राधै पा है वि
लुलित वेनी॥ चंचल रूप लत निसंग डोल
ति उनु आलिसैनी॥१२१॥ मोहन पिय की म
ल्लकानि फुलकनि मोर मुकट की॥ सदा
वसो मन मेरै फरकनि पियरै पट की॥१२२
केइ सषि कर पतिर पवीधि नृतति छविली
तिय॥ मानुहूं कर तलफिर तेलटु दे षिल
टु होत पिय॥१२३॥ केई नाइक के भेदभाव

ल्लावनाहृपसव ॥ अभिनयकरिदिषरा
वतगावतगुनप्रियकेजव ॥ १२४ ॥ तबना
गरनंदलालचाहिचितचकितहोतयों ॥
निजप्रतिबिंबबिलासनिरषिसिसुमुत्तिर
हतज्यों ॥ १२५ ॥ रीझिपरसपरवारतअंबर
आभरनअंगअंगके ॥ अवरतवहिवानिर
हततहाअद्भुतरंगरंगके ॥ १२६ ॥ केईमुर
लीसुरलीयरंगीलीरंगहिवढावति ॥ केइ
ईमुरलीकौंछेकिछवीलीअद्भुतगावति ॥ १
२७ ॥ नाहिंसांवरेकुंवररीझिहंसिलेतभुज

नमाहि॥ चैवनकारिसुषसदनवदनतेदेत
तंवोरठोरि॥ १८८॥ जगमैजोसंगीतनृत्यतिसु
रनररीजुततिहि॥ जोवूजतिपनिकैसंह
जगवनऽप्रागमगावततिहि॥ १८९॥ रागरा
गनीसमपतिनकोवोलिवोसुहायो॥ सुक
वनःपैकहिऽप्रावैजोवूजदेवीनिगायो॥ १९०
मीवमीवमुजमेलिकेलिकमनीपवढी
ऽप्रति॥ लटकिलटकिवकनृततिकापैंक
हिऽप्रावैगति॥ १९१॥ जोकछुरासमंडलमे
व.जजुवतीनिवृततकीनैं॥ सुकवनपैंक

हिंग्प्राबैठ्ठि निहारि बकारिली नैौं ॥ १५२ ॥ उह
ग्प्रद्भुतं तरसर ह्योरासगीत धके निसुनि मो है ॥
मुनि ॥ सिलासलिल कै चली सिलिल सि
लाहै दुगरु पुनि ॥ १५३ ॥ पवनथ कैया सुसि
थ कैया थ कैया उडमंडल सगरो ॥ पाछै रबिर
थथ कैया चल्यो नहिंग्प्रागें दगरो ॥ १५४ ॥ री
झिसरद की रजनी नजनी कि ती कवाढी ॥
बिलसत सज्जनी स्यांम जथा रुचि ग्प्रति रति
वाढी ॥ १५५ ॥ उहि बिधि बिबिधि बिलास बि
लसि सुष कुंज सदन कै ॥ चले है जमुन जल

क्रीडुनव्रीडन कोटिमदन के ॥ १९६ ॥ पुष्पसि
मरग जीमाल चाल मद गजनिमम त्त कित
घुमत रासमरै नैन गेंडु स्यलासमुफल कित
१९७ ॥ जाइ जमनु जल धसै लसै छवि प
तिनवरनी ॥ विहरत भामा नीगजराजनसंग
तिइन रनी कहनी ॥ १९८ ॥ तियनि के त
न जल मगन व दन ज्यौं छवि छाए ॥
फुलै है जल जमुनक नक के कमल सुहा
ए ॥ १९९ ॥ मनु तुलनको जुतिनि भरि भरि पि
य कौं तियजलमलति ॥ जनु प्रतिनिसों अ

रि वृंद वृंद मकरंद निषिलति ॥२००॥ यह
ऽपद्भुत रसरास सकल तित कछु कहि नहि ऽप्रा
वैं ॥ सनक सनंदन नारद सारद ऽप्रति ही
भावैं ॥१॥ सेस सहस मुष गावैं ऽप्रजहूं ऽप्रंत न
न पावैं ॥ सिव मन निही मन ध्यावैं कोऊ नहि
न जनावैं ॥२॥ जदपि यदुक मलाऽप्रमिला
सेवति है दिन ॥ यह रस ऽप्रपने सपने कव
हूं नहि पायो तिन ॥३॥ ऽप्रजऽप्रजहूं रडवें द
त सुंदर वृंदावन की ॥ सो तनक कहूं नहि पा
वत सुतलमिटत नहि मन की ॥४॥ विनिऽप्र

षि कारि भइ न हि न वृंदावन सुझै ॥ रेन कहांतें सुझै जब लग ववस्ल न बुझै ॥ ५ ॥ निपट निकट घटमै ज्यों अंतर जामी ऽपाही ॥ विषय विदूषित इंद्रिय प्रकारि सकै न हि ताही ॥ ६ ॥ जो यह लीला गावै हित सौं सुनै सुनावै ॥ प्रेम भगति सो पावै ऽब्रु सब कै जिय भावै ॥ ७ ॥ हि नशुहानिंदक नास्ति कहारि धर्म वहिर्मुष ॥ तिन सो कवहूं न कहैं कहै तौ न हि नल हे सुष ॥ ८ ॥ भगवत निन सौं कहै जिन कै भागवत धर्म वल ॥ ज्यों जमुना के मीन न लीन न नि

नरहत जनमु न जल ॥ ९ ॥ जदपि सप्त निधि
भेदि निज जमुना निगम वषाने ॥ तैं तहि हि धा
र हि धारर मत जल कूव तनकप्राने ॥ १० ॥ य
हु जल रस माला कोटि जतनन करि पाई ॥ सा
वषान कै पहिरै पहिरै तो तो मत कोई ॥ ११ ॥ श्र
वन कीर्तन सार सार सुमिरन कौ है पुनि ॥
ज्ञान सार [illegible] ध्यान सार श्रुति सार गुथी
गुनि ॥ १२ ॥ अघहरनि मनहरनी सुंदर प्र
म वितरनी ॥ नंददास कैं कंठ वसो नित मंग
लकरनी ॥ १३ ॥ इति श्री पंचाध्याई भाषा नंद ॥

इति श्री ॥ पंचा ॥ ध्याई ॥ भाषा ॥ नंद ॥ दास ॥ जी
कृतं ॥ संपूर्ण ॥ सुभ ॥ मस्तु ॥ श्रीमदन ॥ गोपा
लायनम ॥ संवत ॥ १८३१ ॥ मिति ॥ मगसिर ॥ व
दि ॥ १ ॥ न ॥ कृस्नपक्षे ॥ लिषितं षुसालीराम
विप्र सुभस्थान पाटन मितारथे श्रीपं
चाध्याई भाषा नंदै सोक श्री श्री श्री दा
कृस्नायनमः श्रीराधाकृस्नायन
मः

पञ्चाध्यायी

नन्ददास कृत।